भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान

(वि. अ. आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित)

वलियमला, तिरुवनंतपुरम 695 547, भारत

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

(वर्ष 2017 - अंक 1)

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

वर्ष 2017- अंक 1

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान

(वि. अ. आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित)

वलियमला, तिरुवनंतपुरम

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

वर्ष 2017- अंक 1

मुख्य संरक्षक

डॉ. विनय कुमार डढ़वाल

संरक्षक

डॉ. ए. चंद्रशेखर

संपादक मंडल

डॉ. दीपक मिश्रा

डॉ. राकेश कुमार सिंह

डॉ. सर्वेश कुमार

डॉ. उमेश आर. कढ़णे

श्रीमती बिंदिया के. आर.

श्री. अभय जैन

श्रीमती सिमी असफ़

श्री. आर. जयपाल

आवरण पृष्ठ डिजाइन एवं मुद्रण

आईआईएसटी पुस्तकालय

अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक, 'अंतरिक्ष धाराएं'

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी)

अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

वलियमला, तिरुवनंतपुरम – 695 547

hindiofficer@iist.ac.in

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
(यूजीसी अधिनियम 1956 की धारा-3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित
भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग, वलियमला पोस्ट, तिरुवनंतपुरम 695 547 भारत

INDIAN INSTITUTE OF SPACE SCIENCE AND TECHNOLOGY
(A Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Government of India, Department of Space
Valiamala P.O., Thiruvananthapuram 695 547 India

www.iist.ac.in

दूरभाष (Tel): +91 471 2568402 फैक्स (Fax): +91 471 2568401 ई-मेल (E-mail): vkdadhwal@iist.ac.in

डॉ. वी. के. डढ़वाल / Dr. V.K. Dadhwal
निदेशक / Director

संदेश

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी), अपने आप में देश का ऐसा प्रथम संस्थान है, जो अंतरिक्ष विज्ञान, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी एवं अंतरिक्ष अनुप्रयोगों में विशेष बल देकर स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरल स्तर पर उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। आईआईएसटी एक ओर पूरी निष्ठा से शिक्षण, अधिगम एवं अनुसंधान में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है तो दूसरी और संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में सदा अग्रणी रहने का प्रयास करता आ रहा है। हमारे लिए यह बड़ी खुशी की बात है कि हमारा संस्थान 'अंतरिक्ष धाराएं' नामक हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका संस्थान के छात्रों एवं कार्मिकों को अपने भीतर छिपी सर्गात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए अनूठा मंच प्रदान करेगी ।

पत्रिका का प्रकाशन श्रमसाध्य कार्य है; 'अंतरिक्ष धाराएं' के लिए लिखने वाले सभी लेखकों, कवियों और विशेषकर संपादक मंडल एवं हिंदी अनुभाग को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। इस पत्रिका के डिज़ाइन एवं मुद्रण में आईआईएसटी पुस्तकालय की सेवाएं सराहनीय है।

इसके साथ ही मैं आशा करता हूँ कि आगे भी संस्थान के छात्र, स्टाफ़ एवं संकाय सदस्य उत्साह और उमंग के साथ नवीन रचनाएँ 'अंतरिक्ष धाराएं' में प्रकाशित करने के लिए देंगे और इससे इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हो।

मैं पत्रिका के प्रकाशन पर अपनी और से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

वि. कु. डढ़वाल

डॉ. वि. कु. डढवाल
निदेशक एवं अध्यक्ष, रा. का. स. (आईआईएसटी)

संपादक की कलम से

अत्यंत हर्ष के साथ हम भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) की हिंदी गृह पत्रिका 'अंतरिक्ष धाराएं' का प्रवेशांक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। संस्थान, अंतरिक्ष अध्ययन में अधुनातन अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन देता है और साथ ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी अपना योगदान देता है। हमें खुशी होती है कि तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन में लगे हुए हमारे छात्र और हमारे कार्मिक हिंदी में विविध लेख, कहानी, कविताएँ और अन्य रचनाएँ इस पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं। इस पत्रिका में अधिकांश सामान्य प्रकृति के लेख हैं । लेकिन आगामी अंकों में तकनीकी लेखों को भी शामिल किया जाएगा।

हम इस पत्रिका के प्रणयन में जुड़े सभी लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए यह मंगल कामना करते हैं कि भविष्य में भी उच्च स्तर की रोचक सामग्री से यह पत्रिका ज्ञानवर्धक, समसामयिक एवं विश्लेषणात्मक बने।

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि इसे पढने के बाद आपके विचार और बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएं।

शुभकामनाओं सहित

आर. जयपाल
हिंदी अधिकारी

संस्थान एक झलक

भारत के दक्षिण पश्चिमी कोने में अरब सागर की लहरों से प्रक्षालित जिस धरती पर सन **1962** में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ था उसी धरती पर अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए आवश्यक मानवशक्ति विकसित करने के महान उद्देश्य से एक और संस्था की स्थापना सन **2007** सितंबर **14** को हुआ जिसका नाम है, भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी)। तत्कालीन इसरो अध्यक्ष श्री. माधवन नायर की मनोकामना पूरी हुई। अंतरिक्ष विभाग ने विश्विद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा तीन के अधीन एक मानित विश्वविद्यालय के रूप में भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान बनाया। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलाधिपति रहे। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के भूतपूर्व निदेशक डॉ. बी. एन. सुरेश ने इस संस्थान के निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया और आरंभ में वीएसएससी के परिसर में ही संस्थान का कार्यकलाप होता था। इस समय संस्थान के अपने परिसर का निर्माण कार्य सह्याद्री के चरणों पर स्थित वलियमला में आरंभ हुआ। 2010 में जब छात्रावास, भोजनालय, व्याख्यान कक्ष, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय आदि के लिए भवनों का निर्माण हुआ तो तुंबा से वलियमला में उसका स्थानंतरण हुआ। अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौदयोगिकी में शिक्षा प्रदान करने वाला एशिया का पहला अंतरिक्ष विज्ञान विश्वविद्यालय है 'भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान'। आईआईएसटी अंतरिक्ष अध्ययन में अधुनातन अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन देता है और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में नई दिशाओं की खोज करने के लिए चिंतन शाला का सृजन करता है।

आईआईएसटी तीन स्नातक कार्यक्रम और १४ स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान कर रहा है।

बी. टेक. कार्यक्रम

- **वांतरिक्ष इंजीनियरी**
- **एविओनिकी**
- **इंजीनियरी भौतिक में बी. टेक. उपाधि के साथ दोहरी उपाधि कार्यक्रम**

वांतरिक्ष इंजीनियरी कार्यक्रम अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के दृष्टिकोण से यांत्रिक इंजीनियरी की शिक्षा प्रदान करता है। छात्र यांत्रिक अभिकल्प, उडान यांत्रिकी, वायुगतिकी, ऊष्मीय व नोदन तंत्र एवं अंतरिक्ष गतिकी आदि विषयों में अध्ययन करते हैं। **एविओनिकी विषय** में अंतिरक्ष तंत्रों से संबंधित इलक्ट्रोनिकी शामिल है। यह पाठ्यक्रम विद्युत् इंजीनियरी, इलक्ट्रोनिकी एवं संचार इंजीनियरी, कंप्यूटर विज्ञान का संकर है। **इंजीनियरी भौतिकी** के लिए प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम समान है और इसमें विज्ञान एवं इंजीनियरी के बुनियादी पाठ्यक्रम शामिल है। दोहरी उपाधि कार्यक्रम के दूसरे और तीसरे वर्षों में मुख्यतः भौतिकी व इंजीनियरी में मूल पाठ्यक्रम शामिल होगा। चौथे वर्ष में छात्र चार स्नातकोत्तर विशेषताओं में से कोई एक पढेंगे जो एम. एस. (खगोलविज्ञान एवं खगोल भौतिकी / पृथ्वी तंत्र विज्ञान / ठोस अवस्था प्रौद्योगिकी) या एम. टेक. उपाधि (प्रकाशिक इंजीनियरी) प्राप्त करने में सहायक होगा। कार्यक्रम के पाँचवें वर्ष में केवल अनुसंधान परियोजना कार्यक्रम ही करने होंगे।

एम. टेक. / एम. एस. कार्यक्रम (दो वर्ष)

इस संस्थान के विविध विभाग उभरते हुए एवं अत्यधिक मांग की जाने वाली विविध विशेषज्ञताओं में, **14** क्षेत्रों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य है – विशिष्ट विषयों पर गहरा ज्ञान प्रदान करना। ये एम. टेक. व एम. एस. कार्यक्रम अंतरिक्ष विभाग /इसरो के सभी वैज्ञानिकों /इंजीनियरों तथा आम जनता के लिए समान अवसर देते हैं।

अनुसंधान गतिविधियाँ

अनुसंधान इस प्रतिष्ठित एवं अद्वितीय संस्थान के परिकल्पित लक्ष्यों का अभिन्न अंग है। सभी विभाग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के परियोजनाओं एवं अनुसंधान में लगे हुए हैं। नियमित पीएचडी कार्यक्रम के अलावा आईआईएसटी तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग जैसे सरकारी ऐजन्सियों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं के ज़रिए विभागों में अनुसंधान होता है। आईआईएसटी इसरो केंद्रों तथा राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों एवं अनुसंधान प्रयोगशालाओं के साथ सक्रियता से सहयोग देते हुए संकाय सदस्यों के अनुसंधान परियोजनाओं के लिए निधि प्रदान करता है। निम्नलिखित तरीकों से संकाय सदस्यों के लिए अनुसंधान परियोजना स्कीम उपलब्ध है। वे हैं - आईआईएसटी अनुसंधान परियोजना/आईआईएसटी - इसरो परियोजना/ आईआईएसटी फ्रास्ट- ट्रैक अनुसंधान परियोजना।

आईआईएसटी का प्रारंभ इसरो में मानव संसाधन की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने तथा प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में अनुसंधान के संबंध में इसरो से सहयोग बनाने के लिए मंच प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था।

इस लक्ष्य की ओर संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा कई आईआईएसटी - इसरो परियोजनाएं शुरू की गई हैं ताकि प्रमोचक वाहनों, प्रदायभार एवं प्रगत उपग्रह तंत्रों से संबंधित अंतरिक्ष मिशनों के लिए प्रौद्योगिकी की पहचान एवं विकास कर सकें। इसरो के विविध केंद्रों द्वारा अपने वर्तमान एवं भावी परियोजनाओं के लिए अपेक्षित प्रगत प्रौद्योगिकियों का विकास करने हेतु, हाल ही में प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकास कक्ष (प्र.अ.प्रौ.वि.क.) की स्थापना की गई है। इस कक्ष का लक्ष्य है- आईआईएसटी एवं इसरो के बीच आम अभिरूचि की नई प्रौद्योगिकियों को पहचानने में आईआईएसटी को सक्षम बनाना।

अनुसंधान इस प्रतिष्ठित एवं अद्‌वितीय संस्थान के परिकल्पित लक्ष्यों का अभिन्न अंग है। सभी विभाग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के परियोजनाओं एवं अनुसंधान में लगे हुए हैं। नियमित पीएचडी कार्यक्रम के अलावा आईआईएसटी तथा विज्ञान व प्रौद्‌योगिकी विभाग जैसे सरकारी ऐजन्सियों द्‌वारा वित्तपोषित परियोजनाओं के ज़रिए विभागों में अनुसंधान होता है। आईआईएसटी इसरो केंद्रों तथा राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों एवं अनुसंधान प्रयोगशालाओं के साथ सक्रियता से सहयोग देते हुए संकाय सदस्यों के अनुसंधान परियोजनाओं के लिए निधि प्रदान करता है। निम्नलिखित तरीकों से संकाय सदस्यों के लिए अनुसंधान परियोजना स्कीम उपलब्ध है। वे हैं - आईआईएसटी अनुसंधान परियोजना/आईआईएसटी - इसरो परियोजना/ आईआईएसटी फ्रास्ट- ट्रैक अनुसंधान परियोजना।

आईआईएसटी का प्रारंभ इसरो में मानव संसाधन की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने तथा प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्‌योगिकी में अनुसंधान के संबंध में इसरो से सहयोग बनाने के लिए मंच प्रदान करने के उद्‌देश्य से किया गया था।

इस लक्ष्य की ओर संस्थान के संकाय सदस्यों द्‌वारा कई आईआईएसटी - इसरो परियोजनाएं शुरू की गई हैं ताकि प्रमोचक वाहनों, प्रदायभार एवं प्रगत उपग्रह तंत्रों से संबंधित अंतरिक्ष मिशनों के लिए प्रौद्‌योगिकी की पहचान एवं विकास कर सकें। इसरो के विविध केंद्रों द्‌वारा अपने वर्तमान एवं भावी परियोजनाओं के लिए अपेक्षित प्रगत प्रौद्‌योगिकियों का विकास करने हेतु, हाल ही में प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्‌योगिकी विकास कक्ष (प्र.अ.प्रौ.वि.क.) की स्थापना की गई है। इस कक्ष का लक्ष्य है- आईआईएसटी एवं इसरो के बीच आम अभिरूचि की नई प्रौद्‌योगिकियों को पहचानने में आईआईएसटी को सक्षम बनाना।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत संस्थापित नैश्नल इनस्टिट्‌यूशनल रैंकिग फ्रेमवर्क द्‌वारा समस्त भारतीय विश्वविद्‌यालयों में 8 वें रैंक से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार शिक्षण एवं अनुसंधान कार्यों, छात्रों का स्थानन प्रयोगशाला व पुस्तकालय, संसाधनों लिंग समानता, संकाय - छात्र अनुपात और अन्य संस्थानों वा उद्‌योगों का साथ सहयोग जैसे विस्तृत मापदंडों के आधार पर मिला है। यह हमारी कड़ी मेहनत की सराहना और सम्मान के रूप में आया यह मानते हुए कि हम अभी एक युवा संस्थान है।

पाठ्‌यक्रम संबंधी गतिविधियों के साथ साथ संस्थान खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यकलापों पर भी काफ़ी जोर देता है। वार्षिक अंतर - महाविद्‌यालय सांस्कृतिक त्योहार - 'धनक' तकनीकी मेला - कॉन्सेनशिया (दोनो छात्रों द्‌वारा आयोजित) तथा वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है । योग का ज्ञान दिलाने तथा स्वस्थ्य जीवन में उसके महत्व को समझाने के उद्‌देश्य से संस्थान नियमित रूप से छात्रों एवं कर्मचारियों के लिए योग के सैद्‌धांतिक एवं व्यवहारिक पक्षों पर महीने-भर के प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करता है।

संस्थान को अपनी आगे की यात्रा में ओर ऊंचाइयों को जीतना है और गौरव प्राप्त करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम एक अनूठी संस्था के रूप में मिलकर काम करेंगे। हमारा लक्ष्य यह है कि भविष्य में यह संस्थान राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केंद्र बन जाए ।

****

विषय सूची

मैं वर्तमान हूँ	1
जय गान	2
मेरी गलतियां	3
पुस्तकालय और उसका सदुपयोग	4
फ्रैन्ड रिक्वस्ट	6
जंक फूड का प्रभाव	7
भारत 'हमारा देश है'	9
ओलंपिक में भारत	10
बेजान ख्वाहिशें	12
खुद ही तय करने होंगे अपने लक्ष्य	13
दर्द के सिलसिले	15
इंतज़ार	16
पीएसएलवी-C37 /कार्टोसेट-2 श्रृखंला उपग्रह	18
सरकारी काम काज में राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ	19
फोटोग्राफ	22
चित्रकला	24
नवागत कार्मिकों का हार्दिक स्वागत	26
वर्ष 2016 के दौरान आईआईएसटी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम	27

प्रमोद पंचाल
पीएचडी (भौतिक विज्ञान)

मैं वर्तमान हूँ

मुझे गौर से देख लो, मैं आज का वर्तमान हूँ।
चेहरों में चेहरों की जीती जागती पहचान हूँ।।

बीते दिन पुराने मुझमें तुम देख लो,
खो चुके जमाने मुझमें तुम देख लो,
भूत और भविष्य का बोधक निशान हूँ,
बनते सपनों के महल का जागता दरबान हूँ।।
मुझे गौर से .....।।

आज का सोचो, रोज का क्यों सोच रहे ?
हर पल में जियों, रोज का क्यों सोच रहे ?
कल जो भी होगा उसका सटीक अनुमान हूँ,
फैसलों में बढ़ा सकूँ फासले, ऐसा दिव्य वरदान हूँ।।
मुझे गौर से ,..... ।।

कुछ माँग के तो देखों, सब कुछ मिलेगा,
खुद को भुलाकर देखों, सब कुछ मिलेगा
पहले मिली हार का, एक मात्र निदान हूँ,
सफलता के कण-कण में सर्वत्र विद्यमान हूँ।।
मुझे गौर से ..... ।।

मु. साबिर आलम
2014 बी. टेक. (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

जय गान

जय जय जय ओ ! आहत मातृभूमि
जय जय तुम्हारा यह अनूठा तादात्म्य
जय अभिव्यक्ति , जय विरोध-प्रदर्शन
जय स्वतंत्रता के बंधन की जकड़न
जय फैली अश्लीलता , जय आचार-संहिता
.जय समानता , नारी-सशक्तिकरण की जय
जय गृह-वापसी , जय फ़तवा जारी
जय धर्म-निरपेक्षता , जयधर्मांतरण
जय जय, गौ-माता की जय जय
जय पथ-भ्रमित अनुज, जय विमोचन
जय घुसपैठी , जय संघर्ष-विराम उल्लंघन
जय काली स्याही, जय शिव की सेना
जय जय देश-प्रेम भावना की जय जय
जय गठबंधन , जय सिंहासन
जय लोकसभा , जय राज्यसभा
जय मुख्यालय , जय दस्तावेज़
जय पक्ष , जय जय विपक्ष
जय काला-धन , जय व्यपामं
आरक्षण व्यवधान की जय जय
जय आरोपण , जय प्रत्यारोपण
जय वक्तव्य , जय भाषण सारे
जय वंशवाद ओ जातिवाद,जय बीमारू राज्य
जय जय चुनावी मौसम की जय जय
जय मानसून, जय महँगाई डायन
जय भूमि अधिग्रहण ,जय विस्थापन
जय आत्म-हत्या करते कृषक सारे
जय नौनिहालों का यौन उत्पीड़न
जय जय जय ओ ! आहत मातृभूमि
जय जय तुम्हारा यह अनूठा तादात्म्य

शशांक साहू
2013 बी.टेक. (भौतिक विज्ञान)

मेरी गलतियां

तुम बाग़ में लगे थे, अकेले थे
तो सोचा तुम्हे तोड़कर कुछ खुशियाँ बाँट लूँगा
इसलिए तो ले आया था तुम्हें तुम्हारे उस संसार से,
कि कभी उसके बालों पर लगा दूंगा तो वो खुश हो जायेगी,
या अपने साथ रखूंगा तो हम दोनों का अकेलापन मिट जाएगा,
या हो सकता तुम्हे किसी को अनायास दे देता तो मुस्कराहट ही आ जाती उसके चेहरे पर |
तुम भी तो अकेले थे, हो सकता है बिखर जाते, कोई ध्यान भी न देता |
पर अभी सोच में पड़ा हूँ कि वो माली क्या सोचेगा, तुम्हे वहां न पाकर के
उसने सीचा है ढूंढेगा तुझे वो जगह - जगह
या हो सकता है वो तितली जो तुम्हारी सखी हो, तुमसे रोज़ मिलने आती हो
क्या वह भी परेशान न हो जायेगी, मेरी वजह से
और हाँ वह हवा जो केवल तुझे छूने आती हो
रुक जायेगी एक पल को
हो सकता है कि सोच पड़े कि
किसी और हवा के थपेड़ों से तुम डर गए या बिखर गए
या फिर उड़कर कहीं चले गए
मै तो न जाने कब से अकेला था, अकेला रह लूँगा
अभी बस ये दिमाग में है कि एक बार तुम्हें जोड़ सकता,
तुम्हारी उस डाली से, उस पौधे से,
पर प्रकृति के आगे असहाय हूँ
कुछ दिन बाद तू लोगों के पास मुरझा जाएगा,
फिर मुझे कहीं रास्ते में किसी के पैरो के नीचे मिलेगा
तो ऐसा करता हूँ कि तुझे किताबों के बीच रख देता हूँ
हो सकता है कुछ ज्यादा दिन चल जाओ
मेरी नज़र भी कभी कभी पड़ ही जाया करेगी
फिर बात कर लूँगा तुमसे दो चार
पर तब तक, तू भी अकेला रहेगा और मैं भी |

पुस्तकालय और उसका सदुपयोग

मनीष जी. एस.
पुस्तकालय सहायक

प्रस्तावना

पुस्तकालय शब्द 'पुस्तक और आलय' दो शब्दों के योग से बना है। आलय का अर्थ है - घर। इस प्रकार पुस्तकालय शब्द का अर्थ हुआ - 'पुस्तकों का घर' पुस्तकालय ज्ञान का मंदिर है। ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकें आवश्यक है। पुस्तकालय वास्तव में सरस्वती के मंदिर, ज्ञान के भण्ड़ार, साहित्य के यश स्तंभ, विद्या के कल्पदुम, आनंद के उद्यान और शांति के आधार है। उन्नति के सभी सूत्र पुस्तकालयों में रखी पुस्तकों में सुरक्षित है। कोई भी विकासेच्छु मनुष्य इनकी सहायता से मनवांछित उन्नति कर सकता है। नम - नम अनुसंधान, नम - नम आविष्कारों तथा नई - नई रचनाओं को उपलब्ध कराने का श्रेय पुस्कालयों को ही जाता है।

पुस्तकालय की उपयोगिता एवं आवश्यकता

पुस्तकालय चाहे शैक्षिक संस्थानों का हो या फिर सार्वजनिक स्थानों का, उसका महत्व एवं उपयोगिता तो शाश्वत है। हमारा देश भारत प्राचीनकाल से ही पुस्तकालयों का भण्ड़ार रहा है। पुस्तकालय विषयक उसकी समृद्धि नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, ओदन्त पुरी आदि विद्यालयों के माध्यम से भी मिलती है। पुस्तकालय न केवल हमारी ज्ञान - पिपासा को शान्त करते है, वरन् हमारे व्यक्तित्व का निर्माण भी करते है, पुस्तकालय में जाकर जब हम महान पुरूषों ऋषियों, कलाकारों वैज्ञानिकों, राष्ट्रभक्तों के आदर्श एवं प्रेरणापरक चरित्र को पढ़ने है, तो हम उनसे प्रेरणा लेते है। समय के सदुपयोग एवं मनोंरजन के सांधनों के रूप में पुस्तकालय की हमारे जीवन में काफी उपयोगिता है। पुस्तके मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ एवं सार्वधिक विश्वसनीय मित्र है। महान देशभक्त एवं विद्वान लाला लजपत राय ने पुस्तकों के महत्व के संदर्भ में कहा थाः "मैं पुस्तकों का नर्क में भी स्वागत करूँगा। इनमें वह शक्ति है जो नर्क को भी स्वर्ग बनाने की क्षमता रखती है।" वास्तव में मनुष्य के लिए ज्ञान अर्जव व बुद्धि के विकास के लिए पुस्तकों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

आधुनिक पुस्तकालय

आधुनिक पुस्तकालय बड़े व्यवस्थित होते हैं। इनमें लाखों की संख्या में पुस्तकें संग्रहित होती है। सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएं आती है। आजकल इलेक्ट्रॉनिकी साधन भी उपलब्ध होते है। अनगिनत सुविधाओं वाले ये बड़े - बड़े पुस्तकालय पूरी तरह व्यवस्थित होते है। ये सारी पुस्तकें विषयानुसार अलग अलग अल्मारियों में रखी जाती है।

उपयोग कैसे करें

विद्यार्थियों को आरंभ से ही पुस्तकालय का उपयोग करना सीखना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे पुस्तकालयों की नियम व्यवस्था को भली - भांति जान ले और उसे बनाए रखने का दृढ़ संकल्प कर लें।

पुस्तकालय के नियम

हर पुस्तकालय के अपने - अपने नियम होते है इन नियमों का पालन करने वाले लोग उसके सदस्य बन जाते है। कुछ पुस्तकालय 15 दिनों के लिए पुस्तक देते है, कुछ एक सप्ताह या कुछ अधिक समय के लिए। छात्रों को चाहिए कि वे समय पर पुस्तक वापस करे। कोई अन्य छात्र उसी पुस्तक की तलाश में होगा - यह सोचकर यथाशीध्र पुस्तक वापस करें।

अच्छा विद्यार्थी पुस्तक को संभाल कर रखता है। उस पर किसी प्रकार का निशान नहीं लगाता। पुस्तकालय

की पुस्तक सबकी संपत्ति है। उस पर किसी भी छात्र को व्यक्तिगत टिप्पणी करने का या निशान लगाने का कोई अधिकार नहीं है। कुछ छात्र पुस्तकों में से चित्र या पन्ने फाड़ लेते है। यह पाप है। कुछ पुस्तकें दुर्लभ होती है। उनकी एक ही प्रति उपलब्ध होती है। अत: उसे अपने पास रख लेना सामाजिक संपत्ति की चोरी करने जैसा है।

मौन और शांत व्यवहार

पुस्तकालय और मंदिर में प्रवेश करना एक समान मानना चाहिए। पुस्तकालय में किसी प्रकार का शोर नहीं करना चाहिए। ज़ोर ज़ोर से बोलने की आदत को बाहर ही छोड़ आना चाहिए। इसी गरिमामय व्यवहार से ही पुस्तकालय का सदुपयोग किया जा सकता है।

उपसंहार

देश और समाज की उन्नति में पुस्तकालय सर्वाधिक सहयोग करते है। हमारे धन और श्रम की बचत करते है। हमारी कठिनाइयों को दूर करते है। हमको अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते है। हमारे मस्तिष्क को ज्ञान विज्ञान से पूर्ण करते है। हमारा मनोरंजन करते है। संसार के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए हमें प्रेरित करते हैं। ज्ञान और विज्ञान में बहुत आगे बढे हुए देशों के बराबर पहुँचने के लिए हमें उत्साहित करते हैं। पुस्तकालय हमारे परम हितैषी है। ऐसे हितैषी का अधिकाधिक प्रचार व प्रसार करना हमारे समाज और सरकार का परम कर्तव्य है। पुस्तकालय का संदेश यह रहता है- ज्ञान की वृद्धि के लिए अंदर आओ, मानव की सेवा के लिए बाहर जाओ।

योगेश चौधरी
पीएचडी, (रसायन विभाग)

फ्रैन्ड रिक्वस्ट

जाने कौन इस चुहे को समझाये की क्लीक सही से किया करे

करते क्लीक वो है और भुगतना हमें पड़ता है

रिक्वैस्ट अक्सेप्ट हुई तो बात दूसरी

नहीं तो रिजेक्शन हमे फेस करना पड़ता है

कितनी बार समझाया कि गैरो को रिक्वैस्ट नही भेजते

लेकिन वोभी कहते है कि क्या अपने क्या गैर

कभी गैर भी अपने होते हैं तो कभी अपने भी गैर बन जाते हैं

ऊपर से उनका एक और कमैंट सुनिए

अरे हम थोडे ही ढूंढ ढूंढ के रिक्वैस्ट भेजते हैं

वो तो फेसबुक की मेहरबानी बोलिए

की जो पल पल हमे याद दिलाते रहते है, ऐड फ्रैन्ड ऐड फ्रैन्ड

जंक फूड का प्रभाव

अरुणिता कुमारी
2014 बी.टेक. (इंजीनियरी भौतिकी)

पहला मित्र - "यार जन्मदिन मुबारक हो।"
दूसरा मित्र - आपका बहुत - बहुत शुक्रिया
पहला मित्र - ये कैसा जन्मदिन मना रहे हो। चलो के. एफ. सी. चलते है।
दूसरा मित्र - अच्छा ठीक है । चलो वहाँ जाकर कुछ खाकर आते है।

आजकल यह वार्तालाप बहुत आम हो गया है। किसी का जन्मदिन हो या कोई खुशी का मौका तब जंक फूड ज्यादतर खाने में दिख जाता है। किसी भी गाँव या शहर की हर दूसरी दुकान पर जंक फूड बिकता नज़र आ जाता है। पिछले कुछ 10-15 सालों में जंक फूड ने बहुत ही प्रसिद्धि पा ली है।

जीवन यापन करने के लिए रोटी कपड़ा और मकान सबसे जरूरी है। हर इन्सान हर पल मेहनत इसीलिए करता है कि वह दो समय की रोटी कमा कर खा सके। किंतु आजकल तो इस रोटी का मतलब ही बदल गया है। साधारण पौष्टिक आहार की जगह आजकल खाद्य पदार्थों में जंक फूड ने ले ली है।

जंक फूड उन खाद्य पदार्थों को कहा जाता है जिनमें बहुत अधिक मात्रा में तेल, मसाले, नमक इत्यादि पाए जाते है और इनमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत होती है।

आजकल बड़े, युवा और बच्चे सभी में जंक फूड का चाव बहुत ज्यादा ही बढ़ गया है। जंक फूड को बनाने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती है और यह बहुत सस्ते भी होते है। इसीलिए इनकी प्रसिद्धि बढ़ रही है।

जंक फूड को बनाने में ज्यादा समय भी नहीं लगता है। आजकल मनुष्य अपने जीवन में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास खाना बनाने का समय नहीं है। वह काम पर ध्यान देने के लिए जल्दी - जल्दी में जंक फूड खाकर ही अपना पेट भर लेता है । आजकल लोग अपने काम की तलाश में परिवार से दूर रहते हैं तो माँ के हाथ का खाना नहीं मिल पाता है । अतः खाना बनाना नहीं सीख पाते है। जब यही बच्चे अपने माँ-बाप से दूर जाकर रहते है तब वे खाना न बनाना आने के कारण जंक फूड खाते हैं। जंक फूड का स्वाद भी बहुत अच्छा होता है क्योकि उनमें तेल, घी, मसाले आदि कई मात्रा में डाला जाता है। इसी कारणवश लोग जंक फूड की ओर खींचते चले जाते है।

आज मनुष्य बहुत बड़ी संख्या में जंक फूड का सेवन कर रहा है। इस कारणवश जरूरी है कि हम इस मुद्दे पर ध्यान दें कि कैसे इस जंक फूड का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ रहा है?

कई अध्ययन के हिसाब से जंक फूड हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है। जंक फूड में अधिक तेल की मात्रा होने पर मोटापा होने का खतरा होता है। यह मोटापा मनुष्य को बीमारियों का घर बना देती है। अधिक वसा वाले जंक फूड से हृदय रोग होने की संभावना होती है। उनसे ब्लड प्रेशर भी बढ़ता है। जंक फूड में अधिक मात्रा में मसाले जैसे मिर्ची इत्यादि का प्रयोग होता है। ऐसे खाद्य पदार्थ खाने से पेट में जलन होती है और एसिड भी अधिक मात्रा में बनता है। इस सभी के कारण अल्सर होने का खतरा भी बढ़ जाता है। जंक फूड में पौष्टिक तत्वों की बहुत कमी होती है। इंसान

के सामान्य विकास के लिए खाने में पोषण जैसे प्रोटीन, विटामिन होना बहुत आवश्यक होता है। इस सब के अभाव के कारण जो बच्चे ज्यादा जंक फूड खाते हैं और पौष्टिक आहार नहीं लेते है उनका मानसिक विकास पूरा नहीं हो पाता। ऐसे लोग अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग नहीं कर पाते। जंक फूड खाने से डायबिटीज़ का भी खतरा होता है। अतः जंक फूड इंसान के लिए बहुत हानिकारक होते हैं।

अमेरिका जैसे विकसित देशों में जंक फूड का बहुत ज्यादा चलन है। हमारे पड़ोसी देश चाइना और जापान में भी जंक फूड बहुत प्रसिद्ध है। भारत के युवा पश्चिमी देशों के चाल-चलन को बहुत अपना रहे है और इसी कारणवश भारत में भी जंक फूड का सेवन बहुत बढ़ गया है।

जब मनुष्य पौष्टिक आहार छोड़ कर जंक फूड को ही अपना आहार बना लेता है तब उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। भारत एक युवा देश है और इसे बहुत तरक्की करनी है। ऐसे में जरूरी है कि भारतवासी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और जंक फूड का सेवन कम से कम करें। किसी भी मुल्क के विकास को नापने के लिए स्वास्थ्य बहुत बड़ा योगदान देता है। अतः यदि भारत विकसित देशों की गिनती में जल्द से जल्द आना चाहता है तो हमे जंक फूड का उपयोग कम करना होगा।

जंक फूड का जन्म पश्चिमी देशों और चाइना आदि में हुआ है। वहाँ पर ये खाद्य पदार्थ "फास्ट फूड" के नाम से जाने जाते हैं। ऐसे मुल्कों के फास्ट फूड में कुछ - कुछ पौष्टिक आहार भी डाले जाते है। इस कारणवश उन पर फास्ट फूड का इतना दुष्प्रभाव नहीं पडता है। किन्तु जब दूसरे मुल्क इस खान-पान के चलन को अपनाते हैं तब वे इन पदार्थों में थोड़ा भी पौष्टिक तत्व नहीं डालते। इसीलिए इन देशों में जंक फूड का ज्यादा बुरा असर होता है।

एक मनुष्य के लिए स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण होता है। अगर वह स्वस्थ है तो वह कोई भी कार्य आसानी से कर सकता है। अतः जरुरत है कि हम जंक फूड का सेवन कम से कम करें। किसी भी चीज़ का प्रयोग जरूरत से ज्यादा करने से हानि ही होती है। वैसे ही जंक फूड को भी अगर कभी- कभार खा लिया जाएँ तो वह इतना दुष्प्रभाव नहीं डालता है। किन्तु यदि हम अपने रोज के खाने में जंक फूड का उपयोग करेंगे तो हमारे स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। इसीलिए हर मनुष्य को अपने खान-पान में पौष्टिक आहार को लाना चाहिए। हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम ज्यादा आलस न करें और घर पर ही खाना बना कर खाए। माता-पिता को भी अपने बच्चों को जंक फूड के बुरे प्रभावों से अवगत कराना चाहिए और उन्हें सतर्क करना चाहिए। विद्यालयों में भी पाठ्यक्रयों में इस मुद्दे को विशेष जगह देनी चाहिए और लोगो को जागरूक करना चाहिए।

"जान है तो जहान है।"
"सर्वे सन्तु निरामयाः।"

हमें इन बातों पर ध्यान देना चाहिए और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए जंक फूड का सेवन कम से कम करना चाहिए। हमें अपने मन पर संयम रखते हुए पौष्टिक आहारों की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए और जंक फूड से दूरी बना कर रखनी चाहिए।

आजकल के युवा और बच्चों में मैगी का बहुत चलन है। किंतु कुछ दिनों पहले जब मैगी पर अध्ययन किया गया तब उसमें जहरीले पदार्थ पाए गए थे। जिसके कारण मैगी को बाजार से बैन/निष्कासित कर दिया था। यह एक उदाहरण है जिसमें जंक फूड हमारे जीवन में जहर घोल रहा है। अतः हमें जंक फूड से दूरी बनाकर ही रखनी चाहिए और एक स्वस्थ जीवन की ओर बढ़ना चाहिए।

प्रमोद पंचाल
पीएचडी (भौतिक विज्ञान)

भारत 'हमारा देश है'

सर्व प्रकाशित, सर्व परिचित हमारा प्यारा देश है।
चमकता और पनपता "भारत" नाम बस एक है।।

शौर्य और पराक्रम के उदाहरण यहाँ देख लो,
धैर्य और परिश्रम के निराकरण यहाँ देख लो,
जीवन का अर्थ बताता, जो मायना शेष है,
हर कण हर बूँद में जिसके एकता का समावेश है,

सर्व प्रकाशित ..... ।।

प्रेम की चाहत में जहाँ दुनिया तरसी है,
यहाँ अपनों का अपनों से रिश्ता पारदर्शी है,
ये हमारा इस दुनिया को एक तथ्यपूर्ण संदेश है,
जो है अन्य देवता तो, हमारा हिन्दुस्तान अखिलेश है।।

सर्व प्रकाशित .....।।

शिवकुमार
2013 बी.टेक. (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

ओलंपिक में भारत

रूपरेखा -

1. **प्रस्तावना**
    - **ओलंपिक का इतिहास**
    - **ओलंपिक में भारत का इतिहास**
2. **ओलंपिक में भारत को महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ एवं तथ्य**
3. **वर्षावार पदक**
4. **ओलंपिक से संबंधित भारत के रोचक तथ्य**
5. **ओलंपिक में भारत के निरंतर लचर प्रदर्शन का कारण**
6. **ओलंपिक में भारत के प्रदर्शन के सुधार के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य**
7. **उपसंहार**

प्रस्तावना

1. ओलंपिक का इतिहास

ओलंपिक विश्व की सबसे बड़ी एवं गरिमामयी खेल प्रतिस्पर्धा है, जिसका आयोजन प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल में दो प्रारूपों, ग्रीष्मकालीन ओलंपिक और शीतकालीन ओलंपिक खेल के रूप में किया जाता है। इसमें लगभग हजारों एथलीट अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं प्रत्येक ओलंपिक में लगभग 200 देश भाग लेते हैं। ओलंपिक के मुख्य खेल कुश्ती, मुक्केबाजी, तीरंदाजी, हॉकी, निशानेबाजी, वॉलीबाल एवं जिम्नास्टिक हैं।

ओलंपिक का प्रारंभ 776 ईसा पूर्व यूनान में हुआ था। जिस समय शांतिपूर्ण काल में विभिन्न राज्यों और प्रदेशों के प्रतिभागी अपना कौशल दिखाते थे। लेकिन प्रथम आधिकारिक ओलंपिक का आयोजन 1896 ई. में यूनान के एथेंस में हुआ था। ओलंपिक का प्रतीक ओलंपिक गोल है जो पांचों महाद्वीपों एशिया, अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, और अस्ट्रेलिया को प्रदार्शित करता हैं।

ओलंपिक में भारत का इतिहास - भारत ने पहली बार ओलंपिक में 1900 ई.में भाग लिया था जिसमें भारत का केवल एकमात्र एथलीट नॉरमन प्रिचर्ड ने देश का प्रतिनिधित्व किया था। तत्पश्चात देश में आंतरिक समस्या होने के कारण भारत अगले चार संस्करणों में भाग नहीं ले पाया और पुनः लायड और बी. टाटा की मदद से अंर्तराष्ट्रीय ओलंपिक संघ से अनुमति लेकर 1920 ई में समूह (टीम) के रूप में भाग लिया और उसके पश्चात् भारत वर्तमान तक ओलंपिक में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

2. ओलंपिक में भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धियां एव तथ्य

- भारत ने पहली बार ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में 1900ई. में भाग लिया।
- भारत ने पहली बार शीतकालीन ओलंपिक में 1964ई. में भाग लिया।
- भारत ने अपना पदक 1900ई. में रजत पदक के रूप में जीता।
- भारत ने पहली बार 1920ई. में समूह (टीम) के रूप में भाग लिया।
- भारत को पहला स्वर्ण पदक पुरुष हॉकी 1920ई. में मिला।
- भारतीय हॉकी दल ने अब तक 11 पदक हासिल किए हैं जो किसी भी देश द्वारा हॉकी में हासिल किए हुए पदकों में सर्वाधिक है।
- भारत ने एक संस्करण में सर्वाधिक 6 पदक लंदन ओलंपिक में हासिल किया।
- लंदन ओलंपिक के पश्चात भारतीय ओलंपिक संगठन स्थापित हुआ।

• भारत की ओर से सर्वाधिक प्रतिभागी 118 ने रियो ओलंपिक 2016 में देश का प्रतिनिधित्व किया।

1. ओलंपिक से संबंधित भारत के रोचक तथ्य

• भारत की ओर से प्रथम ओलंपिक प्रतिभागी 1900 में नॉरमन प्रिचर्ड था, जो एक ब्रिटिश भारतीय नागरिक थे।

• भारत ने 1904 ई. से 1916 ई तक देश में गुलामी से संबंधित समस्या से जूझने के कारण भाग न ले सका।

• सन 1900 ई में 1940 तक के ओलंपिक संस्करण में भारत के झण्डे में ब्रिटिश का भी झण्डा था।

• भारत ने पुरुष हॉकी में सन 1928 से सन 1956 तक लगातार 6 स्वर्ण पदक हासिल किए और 1 रजत पदक, 2 काँस्य पदक हासिल किए जो हॉकी में किसी भी देश द्वारा हासिल किए पदकों में सर्वाधिक है।

• भारत की तरफ से पहला व्यक्तिगत पदक दादासाहेब जाद्धव ने कुश्ती में 1952 में काँस्य पदक के रूप में हासिल किया।

• भारत की तरफ से कर्नम मल्लेश्वरी ने सिडनी 2000 में ओलंपिक में भारोत्तोलन में कांस्य पदक हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला बनी।

• अभिनव बिंद्रा ने पहली बार व्यक्तिगत स्वर्ण पदक सन 2008 में बीजिंग ओलंपिक में जीता।

• सुशील कुमार दो यक्तिगत पदक जीतने वाले एक मात्र भारतीय हैं।

• 1960 रोम ओलंपिक में मिल्खा सिंह नजदीकी मुकाबले में 400 मीटर दौड़ में हार गए और 4 स्थान प्राप्त किया।

• 1984 ओलंपिक में भारत की उड़ानमरी कहे जाने वाली पी.टी. ऊषा सेकेण्ड से सौंवे भाग से हार कर भरत के लिए पदक लाने से चूक गई।

• रियो ओलंपिक 2016 में पी.वी. सिंधू रजत पदक हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला बनी।

• रियो ओलंपिक 2016 में दीपा करमाकर पहली बार जिम्नास्टिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली महिला बनी।

1. लच्चर प्रदर्शन का कारण

• राजनीतिक हस्तक्षेप

• क्षीण अधिकारिक संरचना

• गरीबी

• पारिवारिक मानसिकता

• क्रिकेट का व्यवसायीकरण

राजनीतिक हस्तक्षेप - भारत के खेल मंत्रालय का निष्पक्ष होकर कार्य न करने से इसका असर भारत के ओलंपिक प्रदर्शन पर पड़ रहा है। 48 करोड़ के बजट में केवल 6 करोड़ 2016 रियो ओलंपिक पर व्यय किया गया।

2. सुधार के संदर्भ में तर्क

• उच्च तकनीकी सुविधाएं

• उचित अधिकारिक संरचना

• लोगो का खेल के प्रति लगाव

• क्रिक्रेट IPL जैसे अन्तरदेशीय प्रतियोगिता का आयोजन

• कम राजनीतिक हस्तक्षेप

3. उपसंहार

हमारे देश में प्रतिभा की कमी नहीं है। कमी है तो बस उसे पहचानने की और सही प्रारुप देने की। फिर भी हमारा देश अन्य देशो की भांति श्रेणी में उच्च आएगा।

वर्षावार पदक सूची

सन	नाम	पदक	खेल
1900	नारमन प्रिचर्ड	रजत	दौड़
	नारमन प्रिचर्ड	रजत	दौड़
1920	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1924	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1928	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1932	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1936	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1948	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1952	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
	दादा साहेब जाधव	कांस्य	कुश्ती
1956	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1960	भारतीय हॉकी दल	रजत	हॉकी
1964	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1968	भारतीय हॉकी दल	कांस्य	हॉकी
1968	भारतीय हॉकी दल	कांस्य	हॉकी
1972	भारतीय हॉकी दल	कांस्य	हॉकी
1980	भारतीय हॉकी दल	स्वर्ण	हॉकी
1996	लिएंडर पेस	कांस्य	टेनिस
2000	कर्णम मल्लेश्वरी	कांस्य	भारोत्तोलन
2004	राजवर्धन सिहं राठौर	रजत	निशानेबाजी
2008	अभिनव बिंद्रा	स्वर्ण	शूटिंग
	सुशील कुमार	रजत	कुश्ती
	बिजेंदर कुमार	कांस्य	मुक्केबाजी
2012	सुशील कुमार	रजत	कुश्ती
	सायना नेहावाल	कांस्य	बैडमिंटन
	गगन नांरग	कांस्य	निशानेबाजी
	योगेश्वर दत्त	कांस्य	कुश्ती
	मैरीकॉम	कांस्य	मुक्केबाजी
	विजय कुमार	रजत	निशानेबाजी
2016	पी.वी. सिंधू	रजत	बैडमिंटन
	साक्षी मलिक	कांस्य	कुश्ती

मुहम्मद साबिर आलम
2014 बी. टेक. (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

बेजान ख्वाहिशें

लफ़्ज़ों से ना रही कोई उम्मीद बाकी
आँखों से ही कोई गज़ल लिख जाएं...
जो बातें उसने कभी कही तो नहीं
आज वही अनकहे फसाने लिख जाएं...
तूफान अक्सर गुज़रते देखे हैं इश्क़ के
कभी भटके झोंके और, काश!!! इधर आ जाएं...
ज़रूरतें दिल की हैं बहुत बेहिसाब.
ज़िंदगी कुच्छ मुफ़लिसी मे भी गुज़ार जाएं...
आओ की इस सैलाब मे डूब ही जाते हैं यार
पनाह की ख्वाहिश मे किधर जाए,कहाँ जाएं...
दिल की क्या बात करें,दिल तो है नादान जाना
की धडकनों को भी दिल मे ही दफ़ना जाएं...
भुला दें हम खुद को खुद ही से
किसी की इबादत में ऐसे मसरूफ़ हो जाएं...
कहते हैं वो, क़यामत में मिलते हैं सब
क्यूँ ना तब तक हम ["साबिर"] हो जाएं...

खुद ही तय करने होंगे अपने लक्ष्य

प्रखर गुप्ता
2015 एम. टेक.

जब अचानक परीक्षा, साक्षात्कार, प्रतियोगी परीक्षा, प्रयोगात्मक, मौखिक परीक्षाओं की सूचना प्राप्त होती है तो, हम लोगों से यह विलाप करते हुए सुनते हैं कि:- हम से नहीं होगा, हम नहीं कर सकते। इतने कम समय में कैसे करेगें, समय बहुत कम है, हो ही नहीं सकता, आदि। इन्हीं तरह तरह के नकारात्मक विचारों से अपने को घिरा हुआ महसूस करते हैं, और साथ ही तनाव अवसाद से शरीर भी ऊर्जा हीन दिखाई देता है। मुँह लटका, चिढ़चिढ़ा व्यवहार आदि शारीरिक लक्षण देखने को मिलते हैं।

हकीकत तो यह है कि समस्याएं तो सभी के जीवन में हैं। दिन के 24 घंटे साल के 365 दिन सभी व्यक्तियों को मिलते हैं। देखने वाली बात यह है कि आप उन्हें किस रूप से लेते हैं। ऐसी विषम स्थिति के लिए स्वंय हम ही जिम्मेदार हैं। यह याद रखना होगा कि परिस्थितियां नहीं बदलेंगी। बदलना स्वयं को होगा। हमारा दृष्टिकोण ही हमारी नियति तय करेगा। वैसे भी ज्ञानियों ने कहा है कि व्यक्ति विषम परिस्थितियों में रहते हुए ही मजबूत बनता है। परंतु नकारात्मक विचार व्यक्ति को कमजोर बनाते हैं। अगर हम यह ठान लें कि चाहे जैसी परिस्थितियां आवे और स्वयं की अन्तरात्मा को मजबूत बनाए और यह कहें कि "हाँ हम तैयार हैं।" मुकाबले के लिए तो बस मन के द्वंद्ध युद्ध में विषम, कठिन परिस्थितियां निश्चित ही परास्त होगी। कोई भी काम आसान होने से पहले मुश्किल ही होता है तो हमे निर्भीक भाव से उस कार्य में जुट जाना चाहिए। वैसे भी कहा गया है कि - "मन के हारे हार है मन के जीते जीत।" इसलिए डरना या घबराना तो बिलकुल नहीं चाहिए, हाँ अगर फिर भी कुछ समय के लिए घबराहट हो तो अपने अंदर तुरंत सकारात्मक विचार लाने चाहिए जैसे कोई बात नही, देख लेंगें, कम समय में तैयार कर लेंगें, अरे चार क्या इसको हम तीन दिन में ही कर लेंगें, तो ऐसे विचार आते ही हमारे शरीर में ऊर्जा का प्रवाह होने लगेगा। बहुत बार ऐसा भी देखने को मिलता है कि डर के कारण या तैयारी न हो पाने पर कायरता का परिचय देते हुए परीक्षा में सम्मिलित ही नही होते है। या यह सोचते हैं कि अगली बार ठीक से तैयारी करके देंगें, अगर वो ऐसा सोचे कि हमने जो भी इतने कम समय में पढ़ा है और वही आएगा तो परीक्षा में जरूर बैठेगा। वैसे भी वीर योद्धा युद्ध से मुख नहीं मोडते। विषम परिस्थिति से निपटने के लिए योजना व समय प्रबंधन करते हुए तुरंत उस दिशा में अग्रसर हो जाना चाहिए। सफलता निश्चित ही कदम चूमेगी। इसके विपरीत अगर हम कार्य को टाले या आलस्य से ग्रसित होकर यह सोचे कि कल करेंगें या भाग्य के भरोसे बैठ जाए, तो आप को पता होना चाहिए कि "सोते हुए सिंह के मुख में हिरन नही आता" या फिर इतने कम समय में कैसे करेंगें। इन सारी व्यर्थ की बातों के सोचने में ही एक दो दिन कट जाएगा और समस्या सुरसा के मुख की तरह विकराल रूप लेती जाएगी और आप स्वयं ही हार जाएगें। सुरसा रूपी समस्या के मुख में जा गिरेंगे।

विषम परिस्थितियों से निपटने के लिए, समस्या को लक्ष्य मान कर योजना व समय प्रबंधन के साथ जुट पड़े, प्रतिदिन हम लक्ष्य के कितना पास पहुँचे हैं। इसका भी आकलन करना चाहिए - जैसे तिनका - तिनका करके ही

घोसला तैयार होता है, और प्रत्येक दिन उत्साह के साथ जुट पड़े। क्योंकि स्वयं पग बढ़ाने से ही मंजिल पर पहुँचा जा सकता है। खड़े रहकर यह सोचना कि सड़क चल पड़ेगी या मंजिल स्वंय आपके पास आएगी, ये सोच तो व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण होगा। "वीर तो रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नही" कई बार ऐसा भी होता है कि शुरू में तो भरपूर जोश से जुट पड़े और बीच में खरगोश की तरह सो गए (मौज मस्ती में लग गए) तब तो आप निश्चित ही जानिए कि कछुआ ही जीतेगा और आप खरगोश होते हुए भी हार जाऐगें।

बस कुल मिलाकर एक ही बात कहना चाहूँगा कि स्थितियां कितनी भी विपरित हों, हमें सकारात्मक मनोवृत्ति से काम लेना चाहिए। सकारात्मक मनोवृत्ति से ही हम संकटों का निवारण कर साहस और आनंद के साथ जीवन जी सकते हैं। वस्तुतः हमारे जीवन में मनोवृत्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे सुख दुख और सफलता - असफलता पूरी तरह से हमारी मनोवृत्ति पर ही निर्भर करती हैं। मनोवृत्ति हमारे कार्यों का मार्गदर्शन, प्रभाव और न्याय करने में मदद करती हैं। हमारी मनोवृत्ति हमें मजबूती देती है, और कमजोरी भी। लेकिन यह हमपर निर्भर है कि हम कैसी मनोवृत्ति रखते हैं। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि सभी जिम्मेदारियों का सारा बोझ अपने खुद के कंधो पर उठाइऐ और इस बात को जानिए की अपनी किस्मत को बनाने वाले आप खुद ही हैं क्योंकि -

"भगवान उसी की सहायता करते हैं, जो स्वयं अपनी सहायता करता है।"

अन्त में एक ही बात कहना चाहूँगा-

सकारात्मक सोच तो मन बलवाना, तब तन बन जाए हनुमाना
तो फिर कहे भय का अनुमाना।

मु. साबिर आलम
2014 बी. टेक. (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

दर्द के सिलसिले

ऐ अमीर-ए-दुनिया ! बदनसीबी की एक दास्ताँ सुनाता हूँ
गुज़र रहा जो अज़ाब सा, वो एक हादसा सुनाता हूँ

बह गया दरिया में मौत के, नन्हा एक फरिश्ता
पानियों में जो बहाता था, काग़ज़ की कश्तियाँ

आँसू, दर्द और सिसकियाँ, बस यही है उनके हक़ में मिलता
यहाँ नौनिहालों को भी खिलखिलाने का वक़्त नहीं मिलता

मुस्कुराहटों और रोटियों की एक ज़ंग सी छिड़ी है
रोटियों की बोझ में बेजान मुस्कुराहटें हार रही हैं

मुरझा गई है हर कली यहाँ खिलने से पहले
और मरना सीख गए हैं हम जीने से पहले

तेरे नज़रों में जानवरों की तरह देखे जा रहे हैं
सामानों की तरह कहीं बेचे, कहीं फेंके जा रहे हैं

हसरतें भी दफ़न हो गई हैं जवान धड़कनों में
ख़ौफ़, बेबसी, मुफ़लिसी बस रवाँ है जहनों में

मिट्टी की पलंग पर, घास की मखमली चादर बिछाए
नीली छत के नीचे, सितारों जड़ी नीली वही चादर ओढ़े
वो किशोरियाँ देखो! बस करवटें बदल रही हैं
शायद अपने सपनों की दुनिया को खुद आग लगा रही है

उजर गया बहार भी यूँ कि फिर ना कोई चमन खिला
सब लूट गया, सब छूट गया, ना वतन मिला ना कफ़न मिला

छाले पड़े हैं पाँवों में, दर्द कितने ही भरे घावों में
जाएं भी तो किस और, दीवारें बना दिए तुमने राहों में

हम ख़तरा हैं तेरे शहर के अमन के लिए
जो खुद मोहताज हैं किसी के करम के लिए

या इलाही!! ना ले और मेरे दर्द की इंतेहाँ
"साबिर" हैं हम बस तेरे रहम के लिए

(सीरिया के सभी पीड़ित शरणार्थियों,
और विशेषकर समंदर में डूबे उस मासूम बालक आइलान कुर्दी को समर्पित)

शंशाक साहू
2013 बी.टेक. (भौतिक विज्ञान)

इंतज़ार

पत्तो की छॉव में सुकून से साथ बैठा वो बेरी खाने में व्यस्त था कि तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी

“करण - करण”

मुट्टी में बेर के ढेर को लिए वो उठा, अपने कपड़े साफ़ किए। दुबला पतला शरीर, आँखे कुछ धंसी हुई, वक्षस्थल की हड्डियों में कुछ उभार, धूप की वजह से हुआ सावला रंग शरीर की त्वचा कुछ ऐसी मानो किसी लोहार ने जला दी हो और पैरो में टूटी चप्पल लिए वो आवाज़ की तरफ़ भागा। सामने से एक छवि उसको अपने सामने आती हुई प्रतीत हुई।

“यादव क्या हुआ?” करण ने अचंभित होते हुए पूछा

“विभत्स्य, बताया नहीं जा सकता, मेरे साथ चलो।” यादव ने हाफते हुए कहा

तन पर नारंगी रंग का एक कुरता जिसकी दाई तरफ से सिलन खुल जाने की वजह से धागा निकल रहा था और गले में लाल रंग का एक पुराना सा अंगोछा जिसका रंग अब असंख्य बार धो दिए जाने के कारण कुछ सफ़ेद सा हो गया था, लिए करण, यादव के पीछे बिना कुछ सोचे - समझे भागा। या शायद यादव ने सोचने का समय ही नहीं दिया जब तक करण कुछ पूछ पाता वो भागता हुआ पास की हलवाई की दुकान तक पहुँच चुका था पसीने में गीला हो रखा अंगोछा अब हवा लगने से कुछ सूख तो चुका था पर करण के माथे के पसीने को वो हवा न सुखा पायी।

शहर की इन गलियों के रास्ते अब उसे याद हो चले थे, और क्यों न हो जाते, यहीं पर उसका सब कुछ था, काफी साल बीत चुके थे, करण को शहर आये हुए। गाँव में रहा करते थे तो कुछ मालूम न था। पिता किसानी करत थे और करण पढाई। कुछ ज्यादा तो नहीं था हाँ पर इतना था जिससे बाप और बेटे दोनों का बसर हो जाता था। बस यही दोनों थे । एक दूसरे के लिए माँ को मरे हुए कई साल बीत चुके थे। हरीश करण को बहुत बड़ा आदमी बनाना चाहता था और करण था भी पढने में अव्वल।

हरीश ने करण को कभी किसानी का काम छूने ही न दिया जैसे कोई बुरी बीमारी हो ये काम, और करण का भी कहाँ मन लगता था। जब भी अखबार में बड़े - बड़े लोगों का साक्षात्कार पढता था तो हरीश के पास भागकर जाता था और उन पृष्ठों को खोलकर दिखाता था और घर भर में जोर - जोर से चिल्लाता था।

“पिताजी मुझे भी अखबार में आना है, मुझे भी ऐसी ही बड़ीगाडी खरीदनी है, ऐसी ही सफ़ेद वाली”

हरीश भी यह सुन कर मुस्कारा देता था, शायद अपने आप महसूस कर लेता था करण में और शायद यही कारण था कि जब गाँव के सारे लोग अपने बच्चो को खेतीबाड़ी सिखा रहे थे तो वो करण को पढ़ा रहा था।

पर समय करवट किस तरफ लेगा किसी को पता नहीं चलता। ज्वर सर से उतर ही नहीं रहा था - इस शाप से कैसे बच पाता, गाँव में न ढंग का अस्पताल था न कोई ढ़ंग का हकीम - प्राण त्याग दिए। हरीश के जाने के बाद उसकी जमीन पर चारो तरफ़ से वार होने लगे और होते भी क्यों न - खेती करने वाला कौन था ही। गाँव के जमींदार के कहने पर कोई उस जमीन में हाथ लगाने को तैयार नहीं था और करण कुर्मी को भी कौन सी खेती आती थी। रिश्तेदारों ने करण को शहर का रुख कर लेने का सुझाव दिया तो गाँव में सब कुछ बेच बाच के शहर आ गया था।

पढ़ाई भी कौन सा काम आई, मजदूरी करके ही चार पैसे कमा लेता था। कभी इधर तो कभी उधर। ऑफिस के बाबू जितना तो नहीं पर थोडा बहुत हिसाब किताब कर लेता था। ठेकेदारों के हत्ते लग गया। कभी मजदूरी करता, कभी हिसाब करता और कभी दोनों। थोडी सी भी ऊँच - नीच हुई तो गालियाँ अलग सुनता था पर चाहे अपने पैसो से हिसाब चुकाए पर पूरा करके ही घर जाता था। बस्ती थी उधर, ही रहता था। शादी भी कर चुका था और एक लड़का भी था। शिशिर।

यही दो थे जिनकी वजह से करण गालियाँ सह कर भी काम करता था। काम से घर जाता था तो शिशिर के हाथ में क्रिकेट का बैट और बॉल देखता था, उसके साथ खेलता था । वही दो थे जिनके लिए वो अगले दिन फिर से मजदूरी करने निकलता था। सपने तो जैसे ख़त्म हो गए थे - शायद सच वे वाकिफ हो चला था। कुछ दीवारों को पाटना काफी मुश्किल होता है।

सामने कुछ भीड़ सी लगी मालूम होती थी । यादव बहुत कोशिश करके भीड़ को चीर करके और करण के लिए जगह बनाने की कोशिश कर रहा था। असमंजस की एक दो लकीरे तो करण के माथे पर भी थी पर हाथो में बेर के उस ढेर को दबाये वो भी यादव के साथ आगे बढ़ रहा था। कुछ देर नें वो उस भीड़ के गोले के बीच में पंहुचा। बिलकुल वैसी ही गाडी खड़ी थी भीरत जैसी उसके हरीश से कभी लेने की बात की थी। वो धुंधली तस्वीर करण के दिमाग में अब घूमने लगी थी। सफ़ेद सी गाडी, उस में लाल रंग के छीटे, खून से लथपथ दो शरीर सामने पड़े थे।

एक औरत और एक बच्चा, बच्चे को पीठ पर एक बस्ता जिसका एक सिरा कुछ फटा सा जान पड़ता था जिसे कई बार शिशिर ठीक करा देने के लिए करण से कहा चूका था और औरत जिसके गाल पर एक छोटा सा तिल था जिसे करण कभी - कभी प्यार में चूम लिया करता था। बेरों का अब हाथों में कोई स्थान न था सो वे वहीं गिर पड़े , कुछ लुढकर भीड़ के बीच पहुच कर दब गए। पर करण को अब उन बेरों की फ़िक न थी। उसके सामने उसका पूरा संसार एक अलग रंग की चादर को ओढ़े हुआ था।

सब कुछ धुंधला सा हो चुका था न अब दृश्यों पर यकीन हो रहा था न भीड़ का कोलाहल सुनाई दे रहा था। अंगोछे की सफेदी भी अब खो चुकी थी। आंसू आखों से तो निकल चुके थे पर गालों तक अभी नहीं पहुचे थे, शायद अभी भी वो वापस लौटने के इंतज़ार में थे।

अभय जैन
हिंदी टंकक

पीएसएलवी-C37 /कार्टोसेट-2 श्रृखंला उपग्रह

पीएसएलवी-C37 का श्रीहरिकोटा से बुधवार, 15 फरवरी, 2017 को सुबह 9.28 बजे आईएसटी पर प्रमोचन किया गया।

भारत के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान के उनतालसवीं उड़ान (पीएसएलवी-C37) में, भू अवलोकन के लिए 714 किलो के कार्टोसैट 2 श्रृंखला उपग्रह और 103 सह-यात्री उपग्रहों को एक साथ 664 किलोग्राम उत्थापन वजन के 505 किलोमीटर में ध्रुवीय सूर्य समकालिक कक्षा (एसएसओ) में प्रमोचन किया गया । पीएसएलवी-C37 सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के पहले लॉन्च पैड (FLP) (एसडीएससी) शार, श्रीहरिकोटा से प्रमोचित किया गया। पीएसएलवी 'एक्सएल' विन्यास में यह सोलहवीं उड़ान (ठोस स्ट्रैप-ऑन मोटर के उपयोग के साथ) हुई।

पीएसएलवी-C 3 7 इसरो के दो नैनो उपग्रह (आईएनएस -1 ए और आईएनएस-1 बी), सह-यात्री उपग्रहों के रूप में वहन करता है। इसरो के अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक) और इलेक्ट्रो प्रकाशिकी प्रणाली (लियोस) प्रयोगशाला के ये दोनों उपग्रह कुल चार अलग-अलग पेलोड को विभिन्न प्रयोगों के प्रचालन के लिए ले गए।

पीएसएलवी-C37 पर सह यात्री उपग्रहों के रूप में 101 नैनो उपग्रह शामिल हैं, इसमें इसराइल, कजाकिस्तान, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के प्रत्येक के एक और संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) के 96 के साथ-साथ भारत के दो नैनो उपग्रह थे । सभी उपग्रहों का कुल वजन 1378 किलोग्राम था।

101 अंतर्राष्ट्रीय ग्राहक नैनो उपग्रहों को एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एंट्रिक्स), अंतरिक्ष विभाग (डीओएस), इसरो की व्यावसायिक शाखा, भारत सरकार की कंपनी और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के बीच में हुए वाणिज्यिक व्यवस्था के तहत प्रमोचन किया गया ।

आर जयपाल
हिंदी अधिकारी, आईआईएसटी

सरकारी काम काज में राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

अंग्रेजी शब्द गवर्मेन्ट बिजिनेस का पर्यायवाची शब्द है सराकारी काम काज। अतः सरकारी काम काज में उन तमाम कार्यकलापों को शामिल किया जा सकता है, जो सरकारी कार्यालयों में प्रतिदिन संपन्न होते हैं। भारत गणराज्य के विशेष संदर्भ में, जिसमें लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है, सरकारी काम काज में अधिक पारदर्शिता की अपेक्षा की जाती है और शासकों तथा जनता के बीच भाषा की दीवार नहीं खड़ी की जानी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत के संविधान के निर्माताओं ने देश में सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा - हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 343 के प्रावधानों के अनुसार देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा है और भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। अनुच्छेद 351 में बताए अनुसार हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के कार्य में केंद्रीय सरकार सदा सतर्क रहती है। सरकार इसको अपना दायित्व मानती है और हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण में तथा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को अभिप्रेरणा एवं प्रोत्साहन देती है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन सरकारी कामकाज का एक अभिन्न अंग है। हम यह मानते हैं कि आज की परिस्थति में विविध सरकारी विभागों के काम काज के साथ साथ सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन ईमानदारी से करने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस लेख में ऐसी चुनौतियों की चर्चा करके उनके समाधान के सुझाव देने का विनम्र प्रयास किया गया है।

भूमिका

सरकारी काम काज का तात्पर्य उन समस्त कार्यकलापों से है, जिनका निष्पादन विविध विभागों के विविध श्रेणियों के कर्मचारियों द्वारा सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया जाता है जिससे जनता को सरकार की ओर से जरूरी सेवाएँ नियमित रूप से प्राप्त हो सकें। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में शासक वर्ग एवं शासित जनता के बीच संचार के माध्यम के रूप में जनभाषा का व्यवहार ही सार्थक सिद्ध हुआ है। अतः संसार के सबसे बड़े लोकतांत्रिक गणराज्य भारत में उस संपर्क भाषा की भूमिका निभाने वाली भाषा हिंदी ही है। यह ज़ाहिर है कि विविध सरकारी विभागों के काम काज एक समान नहीं है। कुछ विभाग जनता की दैनिक आवश्यकताओं से सीधा संबंध रखते हैं जब कि कुछ अन्य विभाग सेवा प्रदायक न होकर उन सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक अवसंरचनाएँ तैयार करने हेतु अनुसंधान के कार्य में जुड़े हैं। अंतरिक्ष विभाग, परमाणु ऊर्जा विभाग, रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन आदि इस दूसरी श्रेणी में आते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास में कार्यरत विभागों एवं संबंधित संगठनों में राजभाषा कार्यान्वयन अलग चुनौतियों का सामना कर रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन

राजभाषा कार्यान्वयन का माना है सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करना, अर्थात् राजभाषा हिंदी से संबंधित संविधानिक उपबंधों, राजभाषा अधिनियम-1963, राजभाषा नियम-1976, राजभाषा के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा जारी आदेशों, तथा समय समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों व अनुदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करना। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित बातों की आवश्यकता है।

1. सरकारी कर्मचारियों को, विशेषकर कार्यपालकों को, राजभाषा नीति संबंधी जागरूकता होना
2. कर्मचारियों को हिंदी भाषा का ज्ञान होना

3. हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना
4. उच्च अधिकारियों की ओर से पहल और अधीनस्थ कर्मचारियों को प्रेरणा देना
5. राजभाषा नीति के अनुपालन में किए गए कार्यों का अभिलेख रखना
6. किए गए कार्य के आधार पर प्रोत्साहन की योजनाएँ शुरू करना
7. कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए उचित जाँच बिंदुओं की स्थापना
8. कार्यन्वयन का अनुवीक्षण, निरीक्षण की व्यवस्था तथा नीति का उल्लंघन करने पर दंड का विधान

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

कर्मचारियों को राजभाषा नीति संबंधी जागरूकता का अभाव तथा हिंदी भाषा का पर्याप्त ज्ञान न होना राजभाषा कार्यान्वयन की सबसे बडी चुनौती है। सरकारी कर्मचारियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विविध राष्ट्रीय नीतियों, नियमों से अवगत हों तथा उनका अनुपालन करें। हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी है कि सरकारी सेवा में प्रवेश करने से पहले किसी व्यक्ति को यह जानकारी नहीं रहती कि केंद्रीय सरकार की राजभाषा हिदीं है, अंग्रेजी नहीं है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) में विनिर्दिष्ट दस्तावेजों तथा राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 में उल्लिखित प्रयोजनों के सिवाए केसी भी मामले में अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य नहीं है। देश के शिक्षित व्यक्ति भी इस बात को उलटा समझते हैं, याने उपर्युक्त मामलों में ही हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है, अन्य मामलों में अंग्रेजी ही चलेगी। इस धारणा को बदलने के लिए कर्मचारियों को सेवा में प्रवेश के समय में दिए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विषय को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए और उनका परिवीक्षा-समापन तभी किया जाए जब वे निर्धारित स्तर का हिंदी प्रशिक्षण पूरा करें।

कार्यान्वयन की दूसरी चुनौती यह है कि विभाग के उच्च अधिकारी इस विषय को गंभीरता से नहीं देखते हैं। अक्सर वे यह मानते हैं कि राजभाषा कार्यान्वयन केवल हिंदी अधिकारी का दायित्व है। राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जिन शीर्षस्थ बैठकों में कार्यालय प्रधान को उपस्थित होना चाहिए, उनमें वे स्वयं उपस्थित न होकर हिंदी कार्मिकों को भेज देते हैं। कार्यालय में प्राप्त किसी भी पत्रादि में यदि हिंदी का प्रयोग किया हुआ पाया जाए तो उसका अवलोकन किए बगैर उसे सीधे हिंदी अनुभाग में भेज दिया जाता है। हिंदी अधिकारी के सिवाए कोई भी अधिकारी स्वयं हिंदी में टिप्पणी आदि नही लिखना चाहते हैं। यदि उच्च अधिकारी स्वयं हिंदी का प्रयोग करें तो अधीनस्थ कर्मचारी भी हिंदी का प्रयोग शुरू करेंगे और कार्यान्वयन में प्रगति आएगी। अन्यथा कार्यान्वयन की प्रगति सिर्फ प्रगति रिपोटों में ही दिखेगी फाइलों में नहीं।

प्रशिक्षण की कमी कार्यान्वयन की प्रगति में बाधक

कार्यान्वयन की प्रगति में प्रशिक्षण की कमी एक बड़ी चुनौती है। जिन व्यक्तियों को अपनी औपचारिक शिक्षा के दौरान हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने का प्रशिक्षण नहीं मिला है, वह पुरानी फाइलें देख कर अंग्रेजी में कार्य करने का आदी हो जाता है। उनको हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण देकर एक नया कार्य संस्कार विकसित करना जरूरी है। परिवीक्षा समापन के पहले ही हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाना बेहतर होगा। युवा वर्ग के कर्मचारियों में नई बातें जल्दी सीखने की क्षमता अधिक होती है। ज्यों ज्यों उम्र ढल जाती है, शिक्षण-प्रशिक्षण में उनकी रुचि कम होती जाती है।

उच्च अधिकारियों द्वारा पहल न की जाने की स्थिति

उच्च अधिकारियों द्वारा पहल न की जाने की स्थिति और एक बड़ी चुनौती है। अक्सर यह देखा जाता है, कि विभागों मंत्रालयों के सचिव, उप सचिव जैसे उच्च पदों पर विराजमान अधिकारी हिंदी भाषा से अधिक अंग्रेजी में कार्यालयीन काम करना पसंद करते हैं। ऐसे लोगों का मानना है कि हिंदी का कार्यान्वयन छोटे अधिकारियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों का काम है। "यथा राजा तथा प्रजा।" यदि विभाग के सचिव फाइलों पर टिप्पणी हिंदी में लिखना शुरू करें तो संयुक्त सचिव, अवर सचिव और यहाँ तक कि कार्यालय सहायक भी हिंदी का प्रयोग करना शुरू करेंगे। उच्च अधिकारियों की मानसिकता जब बदलेगी, हिंदी के प्रति जब उनमें झुकाव आने लगेगा तब पूरे विभाग में या कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढने लगेगा। हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह या हिंदी पख़वाडा समारोह में अपने अधीनस्थय कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का आह्वान करने के साथ साथ यदि उच्च अधिकारी स्वयं फाइलों पर हिंदी लिखना शुरू करेंगे तो देखते ही देखते कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढेगा।

कार्यो का अभिलेख रखना चुनौती पूर्ण

राजभाषा नीति के अनुपालन में किए गए कार्यो का अभिलेख रखना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। राजभाषा कार्यान्वयन में जो प्रगति हो रही है, इसका पुनरीक्षण करने के लिए तथा कार्यान्वयन को और कारगार बनाने के उपाय ढूँढने के लिए ऐसे अभिलेखों की आवश्यकता होती है। इन्हीं

अभिलेखों के आधार पर तिमाही, छमाही या वार्षिक प्रगति रिपोटें तैयार की जाती हैं। इन्हीं रिपोर्टों की समीक्षा करके राजभाषा विभाग नए लक्ष्य निर्धारित करता है। ऐसी रिपोर्ट तैयार करना हिंदी अधिकरी का काम है लेकिन संबंधित अनुभागों से सही आंकड़े अकसर प्राप्त नहीं होते हैं क्यों कि वे हिंदी कार्यान्वयन के रूप में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा नहीं रखते हैं। यह बड़ी समस्या है। उदाहरण के लिए अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन जारी कागज़ातों का विवरण सभी रिपोर्टों में देना ज़रूरी है। जब संबंधित अधिकारियों से जारी किए गए दस्तावेजों का ब्यौरा माँगा जाए तो उलटा सीधा उत्तर ही मिलता है। अब हिंदी अधिकारी द्विविधा में पड़ जाता है। गलत रिपोर्ट कैसे दे सकता है वह? यदि रिपोर्ट में ऐसा आँकड़ा दिया जाए जिसके अनुसार निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ हो तो प्रशासनिक प्रधान रिपोर्ट पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे। संबंधित अधिकारी द्वारा दिए गए आँकड़ों को सुधार कर हिंदी अधिकारी को काम चलाऊ रिपोर्ट बनानी पडती है। ऐसी बेबुनियाद रिपोर्टों के कारण ही राजभाषा विभाग हर वर्ष लक्ष्यों में बढोत्तरी करता आ रहा है।

जाँच बिंदुओं की स्थापना

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी आदेशों व अनुदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को जाँच बिंदु बनाया जाता है। जाँच बिंदुओं की स्थापना के बाबजूद कई कार्यालयों में सही ढंग से कार्यान्वयन नहीं हो रहा है। संबंधित अधिकारी इसपर ध्यान ही नही देते हैं अथवा इसकी अनदेखी करते हैं। यह विडंबना की बात है। लेखन सामग्री के मुद्रण के लिए कोई अधिकारी मांग पत्र प्रस्तुत करता है, क्रय अधिकारी क्रय आदेश जारी करता है। अब सामग्री का द्विभाषी रूप में मुद्रित होना सुनिश्चित करने के लिए भंडार अधिकारी को जांच बिंदु बना दिया गया है। तब भंडार अधिकारी को क्रय आदेश के अनुसार प्राप्त माल की जाँच करके यह सुनिश्चित करना है कि लेखन सामग्री का मुद्रण हिंदी और अंग्रेजी दोनों भषाओं में हुआ है। यदि नहीं हुआ है तो माल वापस करें और उसको तभी स्वीकार करें जब द्विभाषी रूप में सामग्री छपकर आए।

अनुवीक्षण निरीक्षण केवल खाना पूरी

राजभाषा कार्यान्वयन पूर्णतः सफल न होने का मुख्य कारण यह है कि कार्यान्वयन संबंधी अनुवीक्षण व निरीक्षण सही ढंग से नहीं किया जा रहा है। ऐसे कार्यालय भी पाए जाते हैं, जिनमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन तक नहीं हुआ हो, यदि गठन हुआ है तो भी उसकी तिमाही बैठकें नियमित रूप से नहीं होती हों। बैठकों का आयोजन होने पर भी उचित मुद्दों पर चर्चा करके कार्रवाई बिंदु तय नहीं किए जाते या कार्रवाई बिंदु तय किए जाने पर उसके कार्यान्वयन पर निगरानी नहीं रखी जाती।

विभागीय निरीक्षण कार्यक्रम

विभागीय निरीक्षण कार्यक्रम के तहत किसी विभाग के एक कार्यालय का उसी विभाग के दूसरे कार्यालय के उच्च अधिकारी द्वारा निरीक्षण किया जाता है। यह कभी कभी "चोर चोर मौसेरे भाई" वाली बात हो गई है। विडंबना की बात यह है कि राजभाषा संबंधी संसदीय स्थायी समिति के निरीक्षण से भी कार्यान्वयन में वांछित प्रगित नहीं हो रही है। यह भी देखा जाता है कि निरीक्षण के लिए यह समिति संबंधित कार्यालय परिसर में न जाके बाहर किसी होटल में दस्तावेजों सहित अधिकारियों के बुलवाकर निरीक्षण कर लेती है। संसदीय राजभाषा समिति जैसी शीर्षस्थ राजभाषा समिति, जो अपनी निरीक्षण रिपोर्ट सीधे-सीधे महामहिम राष्ट्रपति को प्रस्तुत करती है, यदि विधिवत कार्य करे तो कार्यान्वयन को और कारगर बनाया जा सकता है।

उपसंहार

सरकारी काम काज में राजभाषा कार्यान्वयन अपने आप में एक चुनौती नहीं है बल्कि अन्य दायित्वों को निभाने के साथ-साथ राजभाषा नीति का कार्यान्वयन भी करना चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेकिन किसी भी सरकारी सेवक को चाहे वह उच्च अधिकारी हो या निचले स्तर का कर्मचारी हो, राजभाषा कार्यान्वयन को संविधानिक दायित्व समझकर इसका अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। उसको चुनौतियों का सामना करते हुए हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग बढाने में कार्यालय या विभाग का सहयोग करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए। हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर अपना ज्ञान वर्धन करना चाहिए और अर्जित ज्ञान का प्रयोग राजभाषा कार्यान्वयन में यथासंभव करना चाहिए। अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान केंद्रित करते हुए जो व्यक्ति आगे बढ़ेगा उसको चुनौतियों से डरने की आवश्यकता नही है। उसका मार्ग प्रशस्त होगा क्यो कि उसका लक्ष्य सच्चा है, एक महान राष्ट्र के निर्माण में उसका योगदान अनमोल साबित होगा।

योगेश चौधरी
पीएचडी, (रसायन विभाग)

फोटोग्राफ

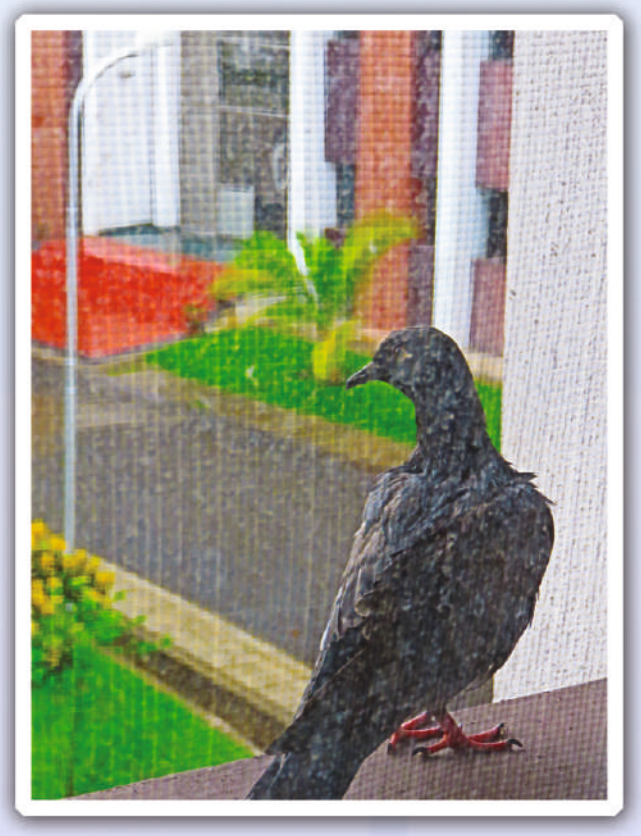

अविनाश चंद्र
2013 बी.टेक. (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

फोटोग्राफ

सौरभ चट्टर्जी
पीएचडी (वांतरिक्ष इंजीनियरी)

चित्रकला

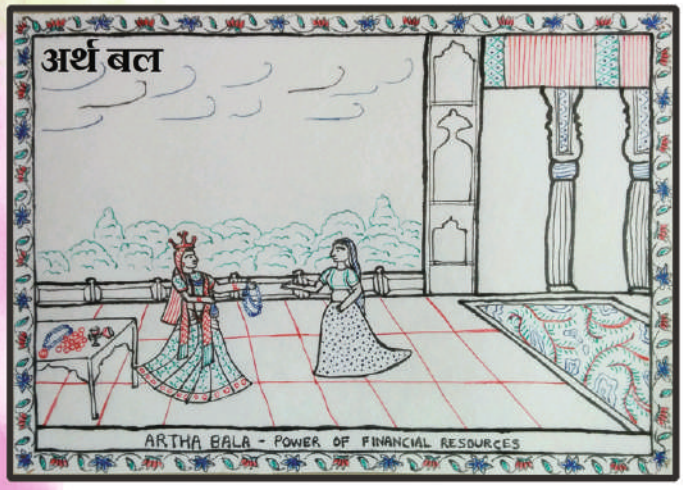

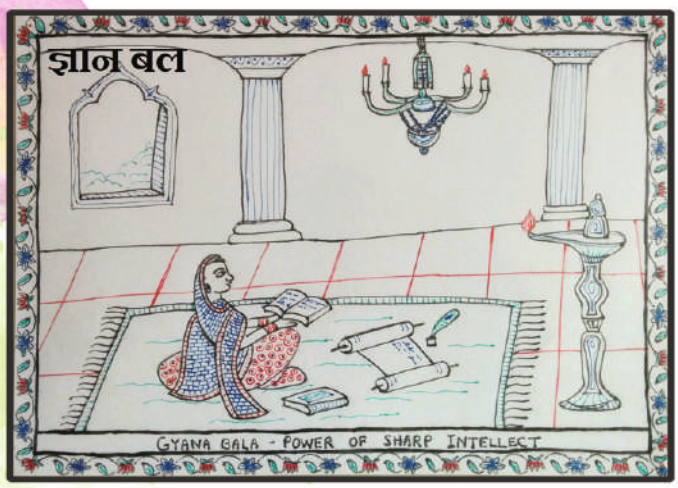

मित्र बल
MITRA BALA - POWER OF FRIENDS AND ALLIES

शस्त्र बल
SHASTRA BALA - POWER OF WEAPONS, MUSCLE POWER

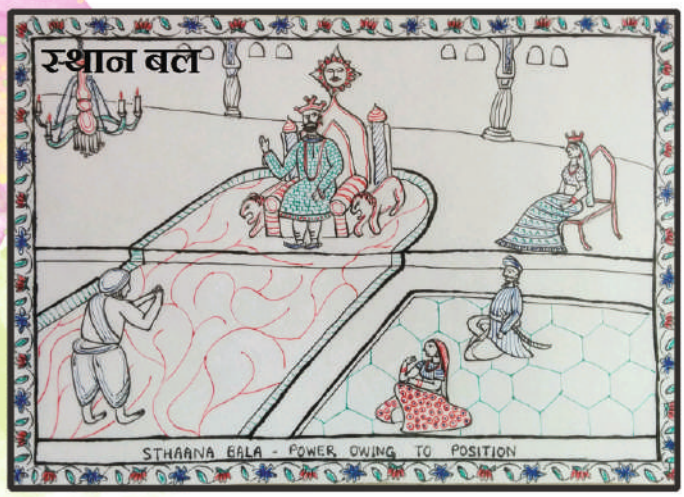
स्थान बल
STHAANA BALA - POWER OWING TO POSITION

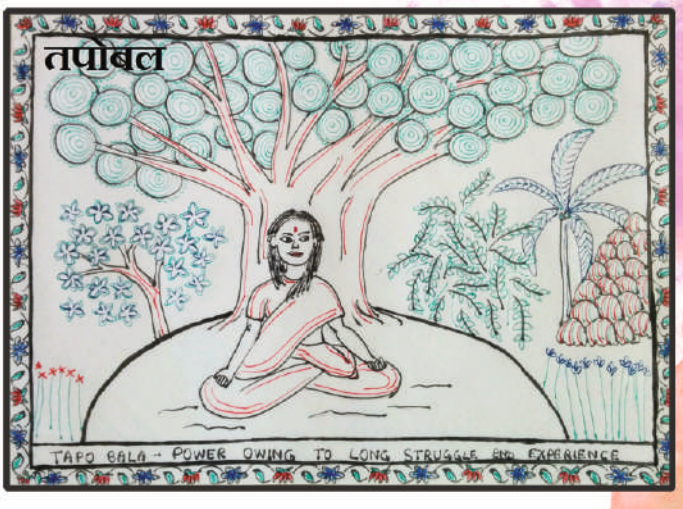
तपोबल
TAPO BALA - POWER OWING TO LONG STRUGGLE AND EXPERIENCE

नवागत कार्मिकों का हार्दिक स्वागत

डॉ. सौरिन मुखोपाध्याय
सहायक आचार्य
भौतिकी विभाग
कार्यारंभ - 30.11.2016

श्री. के. आर. प्रदीप कुमार
प्रशासन अधिकारी
(जन संपर्क, होस्टल सेवाओं तथा परिवहन सेवाओं का कार्यभार)
कार्यारंभ - 15.12.2016

डॉ. आर. सुदर्शन कार्तिक
सहायक आचार्य
एविओनिकी विभाग
कार्यारंभ - 27.02.2017

डॉ. दिनेश एन. नायक
सहायक आचार्य
भौतिकी विभाग
कार्यारंभ - 28.03.2017

वर्ष 2016 के दौरान आईआईएसटी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम

1. विश्व हिंदी दिवस समारोह 2016

विश्व हिंदी दिवस समारोह - 2016 के उपलक्ष्य में हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिताएं चलाई गईं। संस्थान के छात्र, संकाय सदस्य तथा अध्यापकेतर कर्मचारियों ने अलग अलग वर्गों के लिए निर्धारित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। **17 मार्च** को इससे संबंधित **पुरस्कार वितरण समारोह** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

2. हिंदी माह का आयोजन

संस्थान में सितंबर - 2016 में हिंदी माह मनाया गया। इसके तहत संस्थान के **छात्रों** के लिए **सितंबर 07, 20, 21 व 26** को तथा **स्टाफ सदस्यों** के लिए **सितंबर 07 व 08** को विविध हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । सभी प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में प्रतिभागी आए । हिंदी माह के दौरान संस्थान के सभी **सहायकों** के लिए **सितंबर 01** को **हिंदी सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण कार्यक्रम** का आयोजन भी किया गया । **अध्यापकीय कर्मचारियों** के लिए **सितंबर 23** को **हिंदी कार्यशाला** आयोजित की गई। **अक्तूबर 26** को **पुरस्कार वितरण समारोह** आयोजित किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

3. संस्थान के अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान में नियमित अंतराल में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । 17 मार्च को संस्थान के कार्यपालकों के लिए, 28 व 29 जून को तकनीकी क्षेत्र के सहायकों के लिए, 29 सितंबर को अध्यापकीय कर्मचारियों के लिए तथा दिसंबर 27 व 28 को प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गईं । सभी प्रतिभागियों ने इन कार्यशालाओं के आयोजन पर अपना संतोष व्यक्त किया और सत्रांत में हुए विचार - विमर्श में प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया ।

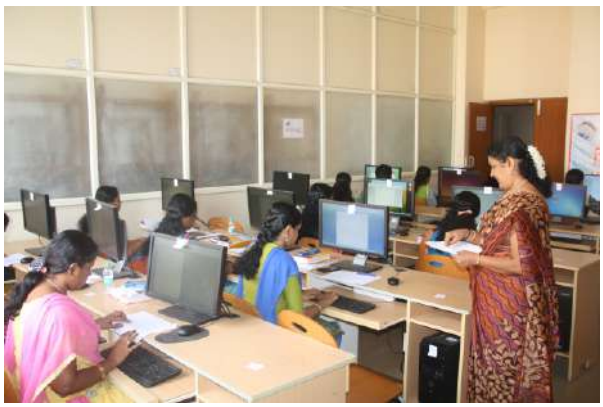

4. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

निदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें हर तिमाही के अंतिम महीने में नियमित रूप से (21.12.2016, 29.09.2016, 23.06.2016, 30.03.2016) आयोजित की गई । राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा परिचालित मदें प्रत्येक तिमाही की बैठक की कार्यसूची में शामिल की गईं।

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

(वर्ष 2017 - अंक 1)

पाठकों से अनुरोध

पत्रिका के इस अंक के संबंध में अपने विचार और बहुमूल्य सुझाव हमको ज़रूर भेज दें।

अगले अंक के लिए रचनाएँ, जैसे हिंदी में लेख, लघु कथाएँ, कविताएँ, फिल्म / पुस्तक समीक्षा, यात्रा विवरण, रिपोर्ट, तकनीकी लेख एवं फोटोग्राफ़ी, चित्र, पेन्सिल चित्र, आरेख आदि आमंत्रित हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि हिंदी में लिखा हुआ या युनिकोड फोन्ट में टाइप किया हुआ लेख तथा अन्य सामग्री की सोफ्ट कॉपी **अगस्त 31, 2017** तक hindiofficer@iist.ac.in पर ई मेल करें।